A **(Printed Pages 3)**

Roll No. _____

AS-2223

एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

JYOTIRVIGYAN

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(होरा ज्योतिष)

समय : तीन घण्टे] **[पूर्णाङ्क : 70**

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। प्रत्येक वर्ग से **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए।

1. अधोलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) दुरूधरा योगों की संख्या कितनी है? उल्लेख कीजिए।

(ख) सारावली के ग्रन्थकार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ग) ज्योतिष शास्त्र में 'नष्टजातक' शब्द से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

(घ) नवांश से आप क्या समझते हैं? स्थिर राशियों में कौन सा नवांश वर्गोत्तम कहलाता है?

(ङ) भाग्यभावस्थ गुरू पर शुक्र की दृष्टि का क्या फल होगा? स्पष्ट कीजिए।

(च) सुनफा योग किसे कहते हैं? बतलाइये।

(छ) चन्द्रमा से नवमस्थ शनि का क्या फल होता है?

(ज) स्त्रीजातक में त्रिशांश का महत्व बतलाइये।

(झ) उभयचरी योग का लक्षण लिखिए।

(त्र) वोशि और वोशि योग किस ग्रह से होते है? बतलाइये।

(प्रथम वर्ग)

2. ग्रहरहित सत्तम भाव की स्थिति में, द्वादश राशियों के नवांश से स्त्रियों के दाम्पत्य जीवन का उल्लेख कीजिए। 10

3. नष्टजातकाध्याय के अन्तर्गत लग्न साधन विधि का सोदाहरण उल्लेख कीजिये। 10

(द्वितीय वर्ग)

4. सारावली के अनुसार, चन्द्रयोगों पर विस्तारपूर्वक तथा उदाहरण सहित प्रकाश डालिए। 10

5. निम्नलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए। 10

(क) सर्वसहः सुभद्रः समकायः सुस्थिरो विपुलसत्त्वः।
नात्युच्चः परिपूर्णो विद्यायुक्तो भवेदुभयचर्याम्।।

(ख) सुअगो बहुभ्रत्यधनो बन्धूनामाश्रयो नृपतितुल्यः।
नित्योत्साही दृष्टो भुङ्क्ते ओगानुभयचर्याम् ।।

(तृतीय वर्ग)

6. ज्योतिषशास्त्र में, भाग्य का विचार किस स्थान से किया जाता है? भाग्यभावस्थ ग्रहों के परिणामस्वरूप शुभाशुभ फलों पर निबन्ध लिखिए। 10

7. चन्द्रमा से दशमस्थ ग्रहों के फलो का सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10

(चतुर्थ वर्ग)

8. निर्याणाध्याय में द्रेष्काण का प्रासङ्गिकता पर प्रकाश डालिए। 10

9. भौमाष्टक वर्ग का सोदाहरण साधन कीजिए। 10